SC

[137/A31]

SEAT No._____ No. of Printed Pages : 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY

M.A. (Hindi)(4th - Semester) Examination

Tuesday, 3 April – 2018

02:00 P.M. To 05:00 P.M.

PA04CHIN03

(छायावादोत्तर काव्य)

कुल गुण : 70

प्रश्न- 1. 'उर्वशी' का कथानक बताते हुए इसके तृतीय अंक का मूल भाव बताइए। (17)

अथवा

नागार्जुन एक प्रगतिवादी कवि हैं – सोदाहरण स्पष्ट करें।

प्रश्न- 2. अज्ञेय द्वारा रचित 'नदी के द्वीप' कविता की समीक्षा करें। (17)

अथवा

' अंधेरे में ' कविता के काव्यरूप को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न- 3. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखे। (18)

(1) ' प्रेत का बयान ' कविता में व्यंग्य।

(2) ' उर्वशी ' का काव्यरूप।

(3) ' अन्धेरे में ' में मानवतावादी स्वर।

(4) नागार्जुन की विचारधारा।

प्रश्न- 4. स-संदर्भ व्याख्या दीजिए। (किन्हीं दो) (18)

(अ) पर ना जाने, बात क्या है।

ईन्द्र का आयुध पुरुष जो झेल सकता है;

सिंह से बाँहें मिलाकर खेल सकता है;

फूल के आगे वही असहाय हो जाता।

शक्ति के रहते हुए निरुपाय हो जाता।

(आ) अबतक क्या किया,

जीवन क्या जिया !!

बताओ तो किस-किसके लिए तुम दौड़ गये

करुणा के दृश्यों से हाय ! मुँह मोड़ गए,

बन गए पत्थर ;

बहुत-बहुत ज्यादा लिया,

दिया बहुत-बहुत कम;

मर गया देश, अरे, जीवित रह गए तुम !!

(इ) मुझे स्मरण है;

और चित्र प्रत्येक

स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझको,

सुनता हूँ मैं,

पर हर स्वर कम्पन लेता है, मुझको मुझ से सोख ।

(ई) श्रेय नहीं कुछ मेरा;

मैं तो डुब गया था स्वयं शून्य में,

वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,

सब कुछ को सौंप जिया था,

सुना आपने जो वह मेरा नहीं;

न वीणा का था;

वह तो सब कुछ की तथता थी ।।